भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

20 जुलाई 2013

जनयुद्ध के दौरान शहीद हुए प्यारे साथियों के सम्मान में 28 जुलाई से 3 अगस्त तक गांव–गांव में शहीद सप्ताह मनाओ!

दुश्मन के आपरेशन ग्रीनहंट को परास्त कर, जनता की राजसत्ता कायम करने हेतु जनयुद्ध को तेज करने का संकल्प लो!

I;kj yxk!

28 जुलाई देश की शोषित जनता के लिए एक प्रेरणादायक दिन है। इसी दिन 1972 में भारतीय क्रांति के अग्रणी नेता कामरेड चारु मजुमदार ने दुश्मन की बर्बर यातनाओं का बहादुरी के साथ मुकाबला करते हुए शहादत को प्राप्त किया था। उसके पहले भी भारत की आजादी के लिए और शोषण व उत्पीड़न को खत्म करने के लिए सामंतवाद और साम्राज्यवाद से लड़कर हजारों लोगों और क्रांतिकारियों ने शहादतें दी थीं। 1857 से जारी भारत की जनवादी क्रांति के इतिहास में नक्सलबाड़ी एक ऐतिहासिक मोड़ है। 23 मई 1967 में पश्चिम बंगाल के इस छोटे से गांव में जो चिनगारी फूट पड़ी उसने इन 46 सालों में एक जबर्दस्त आग बनकर उत्तर से दक्षिण तक और पूरब से पश्चिम तक पूरे देश को अपने आगोश में ले रखा है।

इस संघर्ष ने भारतीय कम्युनिस्ट राजनीति में दशकों से जड़ें जमाए हुए संशोधनवाद और सुधारवाद की कमर तोड़ दी। उथल–पुथल भरे 1960 के दशक में कामरेड्स चारु मजुमदार और कन्नाई चटर्जी ने इस संघर्ष की अगुवाई की थी। उन्होंने संशोधनवाद से एक स्पष्ट विभाजन रेखा खींचकर दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाइन को भारत की ठोस परिस्थिति में लागू किया। और आज वे भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के संस्थापक नेता, महान शिक्षक और पथ–प्रदर्शक के रूप में इतिहास में दर्ज हुए हैं। इन 46 सालों में भारतीय क्रांति को कई उतार–चढ़ाव देखने पड़े। कई टेढ़े–मेढ़े रास्तों से होकर वह आगे बढ़ रही है। हालांकि वह आज जबर्दस्त चुनौतियों और कठिनाइयों का सामना कर रही है फिर भी देश की तमाम शोषित व उत्पीड़ित जनता की उम्मीदें उसकी प्रगति पर टिकी हुई हैं।

हर साल हम कामरेड चारु मजुमदार की बरसी को 'शहीद सप्ताह' के रूप में मनाते हैं। इस मौके पर हम भारतीय क्रांति को आगे बढ़ाने के क्रम में देश भर में शहीद हुए तमाम साथियों को याद करते हैं। उनके आदर्शों से प्रेरणा लेकर अपने कार्यभारों को पूरा करने हेतु आगे बढ़ने का संकल्प लेते हैं। पिछले शहीद सप्ताह से लेकर अभी तक दण्डकारण्य में तथा बिहार–झारखण्ड, आंध्रप्रदेश, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र आदि देश के विभिन्न संघर्ष के क्षेत्रों में दर्जनों कामरेडों ने शोषक शासक वर्गों के भाड़े के पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों से लड़ते हुए अपनी जानें कुरबान कीं। माओवादी आंदोलन का जड़ से सफाया करके देश की तमाम प्राकृतिक सम्पदाओं को दलाल पूंजीपतियों व विदेशी कार्पोरेट कम्पनियों के हवाले करने की मंशा से देश के लुटेरे शासक वर्गों ने अपने साम्राज्यवादी आकाओं की शह पर आपरेशन ग्रीनहंट के नाम से जनता पर एक अन्यायपूर्ण व फासीवादी युद्ध छेड़ रखा है। इसके अंतर्गत दुश्मन फर्जी मुठभेड़ों और नरसंहारों को लगातार अंजाम देते हुए क्रांतिकारियों के साथ–साथ कई आम लोगों की भी हत्या कर रहा है। बहुचर्चित सारकिनगुड़ा नरसंहार के बाद 17 मई का एड्समेट्टा नरसंहार उसकी बर्बरता की एक ताजा मिसाल है जिसमें तीन मासूम बच्चों समेत 8 बेकसूर ग्रामीणों की गोली मारकर हत्या की गई। इसके अलावा, एक साल के दरमियान कुछ महत्वपूर्ण कामरेडों की मृत्यु बीमारियों और हादसों से भी हुई।

साथ ही साथ, कश्मीर और पूर्वोत्तर के इलाकों में जारी राष्ट्रीयता संघर्षों में भी कई लोग शहीद हो चुके हैं। और दुनिया भर में साम्राज्यवाद और हर किस्म के प्रतिक्रियावाद से लड़ते हुए भी कई लोग शहीद हो गए हैं। भाकपा (माओवादी) की दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी इन तमाम शहीदों को विनम्रतापूर्वक लाल जोहार पेश करती है।

15 जुलाई 2012 को दक्षिण रीजनल कमेटी सदस्य और दक्षिण बस्तर डिवीजनल कमेटी सचिव कामरेड विजय (मड़काम हिड़मा) एक दर्दनाक हादसे में शहीद हो गए। बस्तर माटी से पैदा हुए कामरेड विजय पिछले 25 सालों से जनता की मुक्ति के लिए समर्पित होकर काम कर रहे थे। 24 सितम्बर 2012 को तकनीकी विभाग के वरिष्ठ कार्यकर्ता कामरेड अमन (कनकास्वामी) की मृत्यु जानलेवा फैल्सिपेरम मलेरिया से हुई थी। वह करीब 28 सालों से क्रांतिकारी आंदोलन में अपना योगदान दे रहे थे। 7 फरवरी 2013 को माड़ डिवीजन में जनताना सरकार की वरिष्ठ व समर्पित कार्यकर्ता कामरेड समिता (नोहरी बाई) की दुखद मृत्यु कैंसर बीमारी चलते हुई थी। 29 अप्रैल 2013 को वरिष्ठ साथी और मार्क्सवादी अध्यापिका कामरेड महिता (लक्ष्मी) की मलेरिया के चलते मृत्यु हुई। कामरेड महिता ने पिछले 32 वर्षों से काम करते हुए आंदोलन में विभिन्न रूपों में योगदान दिया। इन महत्वपूर्ण व वरिष्ठ कामरेडों की दुखद मृत्यु से क्रांतिकारी आंदोलन को बड़ा नुकसान हुआ।

इसके अलावा दुश्मन के साथ हुई झड़पों या दुश्मन द्वारा की गई फर्जी मुठभेड़ों में जिन साथियों की शहादत हुई ऐसी कुछ घटनाओं का विवरण इस प्रकार है –

- 12 दिसम्बर 2012 को माड़ डिवीजन के कोंगे गांव के पास जंगल में दुश्मन द्वारा घेरकर किए गए हमले में जन मिलिशिया सदस्य कामरेड सैनू मट्टामी शहीद हो गए।
- 19 जनवरी 2013 को गड़चिरोली जिला, अहेरी इलाके के गोविंदगांव में दुश्मन ने मुखबिर की सूचना पर घात लगाकर हमला किया जिसमें कामरेड्स शंकर उर्फ मुनेश्वर लकड़ा (डीवीसीएम), विनोद उर्फ चंद्रैया कोड़ापे (एसीएम), गीता कुमोटी (पीपीसीएम), मोहन कोवासी (एसीएम), लेब्बे गावड़े उर्फ रंजू और जूरू शहीद हो गए।
- 19 जनवरी 2013 को ही उत्तर बस्तर के भुरभुसी गांव के पास बीएसएफ और पुलिस बलों ने अंधाधुंध गोलीबारी कर कामरेड्स सुमित्रा और सनोति की हत्या की। उस वक्त वो साथी नहा रही थीं जिससे उन्हें संभलने का मौका ही नहीं मिला।
- 24 फरवरी 2013 को पश्चिम बस्तर के कोरचेली के पास हुई मुठभेड़ में कम्पनी–2 का बहादुर योद्धा कामरेड़ पुनेम बुधराम उर्फ किस्मत (पीपीसीएम) दुश्मन से लड़ते हुए शहीद हो गए। इस दौरान दुश्मन ने कामरेड सलीम उर्फ सम्मिरेड्डी को भी पकड़कर फर्जी मुठभेड़ में मार डाला जो गांव में रहकर आम जिंदगी जी रहे थे।
- 1 मार्च 2013 को नारायणपुर जिले के मांदोड़ा गांव में पुलिस बलों ने मिलिशिया सदस्यों पर अंधाधुंध गोलीबारी कर कामरेड गुधराम नेंडी की हत्या की।
- 4 अप्रैल 2013 को गढ़चिरोली जिले के भामरागढ़ तहसील, भटपार गांव में जनता के साथ बैठक कर रहे गुरिल्ला दस्ते पर सी–60 कमाण्डों ने अंधाधुंध गोलीबारी की जिसमें कामरेड लक्ष्मण (एसीएम), मिलिशिया सदस्य कामरेड्स प्रकाश और सुधाकर के अलावा गांव की अम्मी और सुनिता नामक दो किशोरियों की मृत्यु हुई।
- 27–28 मार्च की दरमियानी रात झारखण्ड के छतरा जिला, कुण्डा पुलिस थाना अंतर्गत लकड़बंधा के जंगलों में सरकार–प्रायोजित तृतीय प्रस्तुति कमेटी (टीपीसी) तथा पुलिस व सीआरपीएफ–कोबरा बलों ने एक भारी हत्याकाण्ड को अंजाम देकर कम से कम 10 कामरेडों की हत्या की। इनमें कामरेड्स ललेश यादव उर्फ प्रशांत (आरसीएम), धर्मेंद्र यादव, प्रफुल्ल, जयकुमार यादव, भोला उर्फ अजय यादव, अल्बर्ट उर्फ बिजय और प्रमोद शामिल हैं।
- 12 अप्रैल 2013 को गढ़चिरोली जिले के सिंदेसूर गांव के पास सी–60 कमाण्डो बलों ने कातिलाना हमला किया जिसमें पीएलजीए के पांच साथियों समेत कुल 7 लोगों की मौत हुई। कामरेड्स कैलास (एसीएम), चम्पा, वसंती, ममिता, नंदु के अलावा दो ग्रामीण सुखदेव गावड़े और कालिदास हिड़को की दुश्मन ने पकड़कर हत्या की। वरिष्ठ और जांबाज साथी कामरेड कैलास ने दुश्मन से डटकर लड़ते हुए अपनी मृत्यु से पहले एक कमाण्डो को मार गिराया।
- 16 अप्रैल 2013 को आंध्रप्रदेश की सीमा से लगे दक्षिण बस्तर के पुव्वर्ति (पुव्वार) गांव में एपी ग्रेहाउण्ड्स, छत्तीसगढ़ पुलिस और सीआरपी–कोबरा बलों के कम से कम चार हजार भाड़े के जवानों ने एक संयुक्त कार्रवाई में उत्तर तेलंगाना के नौ कामरेडों की हत्या कर दी। इस फासीवादी हमले में कामरेड्स मर्री रवि उर्फ सुधाकर (एसजेडसीएम), गुगलोत लक्ष्मी उर्फ पुष्पा (केकेडब्ल्यू डीवीसीएम), वेट्टि नरसक्का उर्फ

सबिता (एटूरनागारम एसी सचिव), दुर्गम राजू (एसीएम), गौतम किरण उर्फ वेंकटि (एसीएम), ऊर्मिला (एसीएम), सीता उर्फ नवता, वसंता उर्फ कुरसम सुमालता और मड़काम भीमा उर्फ अजय शहीद हो गए।

l;kj ykxk vkj lkfFk;k!

आज देश में कांग्रेस, भाजपा समेत तमाम शोषक वर्गीय पार्टियों का जनता की नजरों में बुरी तरह पर्दाफाश हो चुका है। जनता जान गई कि पिछले 65 सालों में इन्होंने देश को गरीबी, भुखमरी, महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, कालाबाजारी और बीमारी के अलावा कुछ नहीं दिया है। सरकार के दावों के विपरीत साम्राज्यवादी संकट का बोझ हमारे देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है जिसको कि बढ़ती बेरोजगारी और मुद्रास्फीति में साफ तौर पर देखा जा सकता है। वर्तमान में देश के शासक साम्राज्यवादपरस्त नीतियों को और ज्यादा आक्रामक रूप से आगे बढ़ा रहे हैं चाहे जनता को जितनी भारी कीमत भी क्यों न चुकानी पड़े। देश की प्राकृतिक सम्पदाओं पर देश–विदेश की कार्पोरेट कम्पनियां बहुत बड़ा डाका डालने के चक्कर में हैं। इसका विरोध करने वाली प्रगतिशील व जनवादी शक्तियों, खासकर माओवादी ताकतों का पशु बल के सहारे दमन किया जा रहा है। आज भारत की क्रांति अभूतपूर्व स्तर पर प्रतिक्रांति से टक्कर ले रही है। दुश्मन हमारी पार्टी, पीएलजीए और क्रांतिकारी आंदोलन का पूरी तरह सफाया करने की मंशा से अपनी एलआइसी नीति के तहत चौतरफा हमला कर रहा है। दूसरी ओर क्रांतिकारी शक्तियां तमाम कठिन परिस्थितियों के बावजूद मजबूती के साथ आगे बढ़ रही हैं। माओवादी जनयुद्ध की लाल आग में अभी–अभी महेन्द्र कर्मा, नंदकुमार पटेल जैसे प्रतिक्रियावादी जलकर राख हो चुके हैं। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारा दुश्मन ताकतवर है। यह निर्मम युद्ध हमसे और ज्यादा खून मांगेगा। साथ ही, इतिहास हमें यह सुअवसर प्रदान कर रहा है कि अगर हम असीम कुरबानियों से नहीं डरते हुए आगे बढ़ेंगे तो हमें कामयाबियां निश्चित रूप से मिलेंगी। देश और दुनिया में मौजूद वस्तुगत हालात क्रांति के पक्ष में हैं। हमारे प्यारे शहीदों से हमें मौत से डरे बिना दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती रहेगी। आइए, शहीदों के खून से लाल हुए सर्वहारा के परचम को ऊंचा उठाए रखें तथा साम्राज्यवाद, सामंतवाद और दलाल नौकरशाह पूंजीवाद को उखाड़ फेंककर नई जनवादी व्यवस्था के निर्माण के रास्ते पर मजबूती से कदम बढ़ाएं।

Gudsa Usendi

(गुड्सा उसेण्डी)

प्रवक्ता

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)